झेलम अथवा हिडास्पास का संग्राम

(BATTLE OF ZELUM OR HYDASPES)
(326 B.C.)

356 ईसा पूर्व में जन्मा सिकन्दर उत्तरी यूनान के एक छोटे से राज्य मेसिडोनिया के शासक फिलिप द्वितीय का पुत्र था। सिकन्दर ने अरस्तु से शिक्षा प्राप्त की थी। बीस वर्ष की अवस्था में ही (336 ईसा पूर्व) सिकन्दर मेसिडोनिया का राजा बना और अपने पिता की एशिया माइनर को जीतने की इच्छा पूर्ण करने के लिए विशाल सेना और सर्वोत्कृष्ट हथियारों के साथ 'विश्व विजय' के स्वप्न को साकार करने के लिए निकल पड़ा। अनेक युद्ध अभियानों के बीच उसने एशिया माइनर को जीत कर सीरिया को पराजित किया और मिस्र तक जा पहुँचा, जहाँ उसने 332 ईसा पूर्व में अलेक्ज़ेंड्रिया नामक नगर को बसाया। अगले वर्ष वह मेसोपोटामिया होता हुआ फारस (ईरान) पहुँचा और वहाँ के राजा डेरियस तृतीय को अरबेला के युद्ध में पराजित कर स्वयं वहाँ का राजा बना और ईरानी राजकुमारी 'रुखसाना' से विवाह कर यूनान और ईरान के बीच सम्बन्ध कायम किये। तत्पश्चात् तुर्क, अफगानिस्तान आदि को जीत कर 326 ईसा पूर्व में वह भारत की ओर बढ़ा और रास्ते में अपनी सेना को थोड़ा विश्राम देकर सही सलामत ओहिन्द (वर्तमान पाकिस्तान में स्थित अटक से कुछ मील ऊपर) के पास सिन्धु पार कर लिया जहाँ तक्षशिला नरेश आम्भीक (Ambhik, the King of Takshashila) ने प्रभूत चाँदी, सोना, हीरा, असंख्य भेड़ों तथा तीन हजार अच्छी नस्ल वाले बैलों की बड़ी संख्या भेंट करते हुए विजेता का हार्दिक स्वागत किया।

इस भव्य स्वागत से इतिहास का महानतम् जनरल सिकन्दर महान् काफी प्रसन्न हुआ और आम्भीक द्वारा दी गई भेंट अपनी भेंट के साथ उसे लौटा कर उसने न केवल उसकी मैत्री प्राप्त की बल्कि मित्रता में तक्षशिला नरेश ने 5000 सैनिक भी दिये। परन्तु तक्षशिला नरेश ने सिकन्दर की अधीनता को स्वीकार कर लिया। आम्भीक की इस निर्बलता का कारण यह था कि वह सिकन्दर की सहायता कर पोरस से अपनी शत्रुता का बदला लेना चाहता था। इस प्रकार तक्षशिला नरेश के आत्मसमर्पण को देखकर निकट के राजाओं, (जैसे अभिसार सौभूति, शिबि आदि राज्यों के राजाओं) ने भी सिकन्दर के सामने घुटने टेक दिये। इसके बाद उत्तरी भारत के शक्तिशाली सम्राट पोरस (पुरु) को संदेश भेजा कि वह सिकन्दर के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दे अथवा युद्ध के लिए तैयार हो जाये। परन्तु साहसी वीर पोरस ने युद्ध की चुनौती को स्वीकार किया। तब सिकन्दर ने पोरस को रौंद डालने का निर्णय लिया।

वास्तव में झेलम युद्ध यूनानी सम्राट सिकन्दर की विश्व विजेता बनने की एक महत्वाकांक्षा का युद्ध था। यह संग्राम उस समय हुआ जब सम्पूर्ण उत्तरी भारत महाभारत युद्ध के बाद अनेक छोटे छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो चुका था। पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष

Scanned by CamScanner

तथा संघर्ष संघात से भारत के सीमा प्रान्त के इन राज्यों की राजनीतिक और सैनिक स्थिति दिन प्रतिदिन घटती ही जा रही थी। आपसी मतभेद के कारण इन राज्यों में आपसी वैमनस्य इतना बढ़ गया था कि वह राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को भुलाकर अपने पड़ोसी राजाओं के पतन में ज्यादा रुचि रखने लगे। राजाओं की अपनी-अपनी ढफली और अपने-अपने राग की प्रवृत्ति ने विदेशी आक्रमणकारियों के लिए (विशेषकर सिकन्दर के लिए) अपने ही हाथों से देश का आक्रमण द्वार खोल दिया जिसका लाभ उठाया सिकन्दर महान ने।

तक्षशिला नरेश सहित अनेक राजाओं द्वारा सिकन्दर महान की अधीनता स्वीकार करने के उपरान्त पंजाब के शक्तिशाली शासक पुरु ने सिकन्दर के आत्मसमर्पण के प्रस्ताव को अस्वीकार करने और उसे युद्ध की चुनौती देने के कारण जुलाई 326 ईसा पूर्व में झेलम का युद्ध सम्पन्न हुआ जिसमें सिकन्दर जीता जरूर, किन्तु पुरु और उसके सैनिकों की वीरता ने उसे आगे नहीं बढ़ने दिया। तभी सिकन्दर को ईरान के विद्रोह का समाचार मिला और वह उसे दबाने के लिए वापस चल दिया। जब वह 323 ईसा पूर्व में बेबिलोन पहुँचा तो वहाँ उसे भीषण ज्वर ने जकड़ लिया, जिसका कोई तात्कालिक इलाज नहीं था। अतः 33 वर्ष की आयु में वहीं सिकन्दर की मृत्यु हो गई।

पोरस राज्य

पोरस का राज्य पंजाब में चिनाव नदी से लेकर झेलम नदी तक फैला हुआ था और इस तरफ झेलम उसके राज्य की सीमा थी। तक्षशिला से झेलम नदी की दूरी लगभग 110 मील थी। जिसे सिकन्दर ने 15 दिनों में तय किया और झेलम के बाएं किनारे पर जलालपुर के पास अपना सैनिक पड़ाव डाला।

तुलनात्मक सैन्य शक्ति, संगठन, अस्त्र-शस्त्र आदि—पोरस की सेनायें

सर डब्ल्यू टार्न ने नवीन अध्ययन के आधार पर बताया है कि पोरस की सेना में 4000 अश्वारोही, 300 रथ, 200 हाथी और 30,000 पैदल सैनिक थे।[1] डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक (प्राचीन भारत का इतिहास) में उल्लेख किया है कि पोरस सिकन्दर के मुकाबले के लिए 50,000 पैदल, 3000 घुड़सवार, 1000 रथ और 130 गज सेना लेकर बढ़ा। जबकि यूनानी लेखकों के अनुसार पोरस की सेना में 50,000 पैदल, 3000 हजार अश्वारोही, 1300 रथ और 130 हाथी थे। मैं भी प्रो. त्रिपाठी के मतों से पूर्णतः सहमत हूँ।

पोरस की सेना का संगठन 'चतुरंग बल' पर हुआ था जिसमें रथों का विशेष महत्व था। लेकिन संग्राम से पहली रात को मूसलाधार वर्षा होने के कारण सम्पूर्ण रण भूमि दल दल बन गयी और इसमें धंसने लगी। पैदल सेना मुख्यतः तीर-कमानों से सुसज्जित थी जिसमें कुछ सेना बल्लम, ढाल और तलवार से भी सुसज्जित थी। प्रतिरक्षात्मक दृष्टिकोण से पैदल सेना कमजोर थी क्योंकि कवच का प्रयोग नहीं करती थी और दलदली भूमि के कारण भारी कमानों का सिरा जमीन पर टेकना असम्भव हो गया। अश्वारोही सेना सबसे दुर्बल थी। साथ ही घुड़सवार कवचयुक्त नहीं थे। गज सेना तो शत्रु में भय उत्पन्न करती थी, लेकिन तीर की अचूक मार से महावतो का देहान्त हो जाता था और महावतों की मृत्यु के बाद ये हाथी अनियन्त्रित हो जाते थे।

सिकन्दर महान् की सेनायें

सिकन्दर की सैन्य शक्ति लगभग 30,000 सैनिकों की थी।[2] इनमें सभी प्रकार की सेना सम्मिलित थी। किन्तु **सर डब्ल्यू टार्न** ने नवीन अध्ययन के आधार पर बताया है कि झेलम

Scanned by CamScanner

नदी के युद्ध स्थल पर पोरस के साथ सिकन्दर ने 53,000 हजार अश्वारोही सेना और लगभग 15,000 पैदल सेना को लगाया था। कहा जाता है कि लगभग 6,000 सैनिकों को साथ लेकर प्रारम्भ में पोरस का सामना किया।

सिकन्दर की सेना का संगठन फैलेंक्सनुमा था जिसमें पैदल सेना की संख्या अधिक थी और उनका मुख्य हथियार 21 फिट लम्बा सरिसा (भाला) था। ये ढाल लिये हुए कवचयुक्त होते थे। एक लाइन में 16 व्यक्ति खड़े होते थे। आक्रमण करते समय पूरा फैलेंक्स एक ठोस दीवार की भांति बढ़ता था। यूनानियों द्वारा निर्मित घुड़सवार सेना का नेतृत्व सिकन्दर स्वयं करता था। घुड़सवारों का दूसरा अंग इस प्रकार के साज समानों से सुसज्जित था कि वह निकट और दूर दोनों प्रकार की लड़ाई कर सके इसके मुकाबले पोरस के पास कोई सेना नहीं थी। सिकन्दर महान् की सेना में युद्ध यन्त्र (Engines of war) की भी व्यवस्था थी जो काफी दूर से शत्रु पर आक्रमण कर सकती थी।

सिकन्दर महान् द्वारा झेलम नदी पार करना

जब सिकन्दर झेलम नदी के पिश्चमी तट पर आ पहुँचा तब उसने पोरस (पुरु) को नदी के पूर्वी तट पर सेना के लिए खड़ा उससे लोहा लेने को सन्नद्ध पाया। क्योंकि तक्षशिला से सिकन्दर ने उसे संदेश भेजा था कि वह आत्म-समर्पण कर उससे भेंट करे। पोरस इसके उत्तर में तैयार खड़ा था, परन्तु युद्ध के लिए आत्म-समर्पण के लिए नहीं। इन दोनों विराट सेनाओं के मध्य झेलम बड़ी ही तीव्र गति से बह रही थी। सिकन्दर ने नदी के तेज प्रवाह और पोरस की सेना को खड़ा देखकर तुरन्त नदी पार करना उचित न समझा। लेकिन दूसरी तरफ सिकन्दर के सामने बहुत बड़ी समस्या यह थी कि यदि वर्षा प्रारम्भ हो गयी तो झेलम को पार करना बिलकुल असम्भव ही हो जायेगा। काफी सोच विचार के बाद उसने अपना शिविर डाल दिया और पोरस को धोखा देने के लिए बाह्य रूप से ऐसा नाटक प्रस्तुत किया मानो यह शिविर बहुत दिनों तक पड़ा रहेगा। इसके साथ ही झेलम नदी को पार करने के लिए उचित स्थान की खोज करता रहा। एक दिन सिकन्दर ने झेलम तट पर युद्ध क्षेत्र से लगभग 16 मील दूर एक ऐसे स्थान[3] की खोज की जहाँ पर नदी छिछली हो गयी थी। सबसे बड़ी मार्के की बात तो यह है कि इस स्थान के बारे में पोरस को जानकारी नहीं थी साथ ही दूसरी महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस स्थान के पास एक छोटा सा जंगल तथा एक टापू था। यह स्थान इसलिए उपयुक्त था कि सिकन्दर अपनी समस्त सैन्य कार्यवाही को रात तक के लिए पोरस से छिपा सकता था।

एरियन के अनुसार सिकन्दर 1100 चुने हुए योद्धाओं को लेकर नदी के चढ़ाव की ओर बढ़ा और वहां रात के अन्धेरे में जबकि मूसलाधार जलवृष्टि, तूफान की तेजी और बिजली की तड़क ने पोरस की सतर्कता शिथिल कर दी थी, टूटे हुए स्थान पर चुपके से झेलम को पार कर लिया। पार उतरने से पहले उसने अपने इरादे को गुप्त रखने के लिए एक और युक्ति से काम लिया था। अपने स्कन्धवारों में क्रेटरस (Kraterous) की अधीनता में उसने एक बड़ी सेना छोड़कर उसे नाच रंग करने का निर्देश दे दिया था जिससे पोरस को विश्वास बना रहे कि आक्रमण वर्षा में नहीं होगा।[4] सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह भी है कि पार उतरने वाले स्थान और स्कन्धावारों के बीच सम्पर्क कायम हेतु सम्पूर्ण मार्ग में रक्षक नियुक्त किये गये थे जिसका संचालन मिलीगर (Meleager) कर रहा था। जदुनाथ सरकार के अनुसार यह घटना युद्धनीतिक प्रतिभा का चमत्कार है।

प्रारम्भिक युद्ध का श्रीगणेश

पार उतरकर सिकन्दर ने अपनी सेना को क्रम में आबद्ध किया और घुड़सवार सैनिकों को आगे कर, पैदल सैनिकों को पीछे से आने का आदेश प्रदान कर नदी के निचले तट पर

Scanned by CamScanner

पोरस के कैम्प की तरफ प्रस्थान किया और ज्यों ही उसने अपने लक्ष्य की आधी दूरी तय की त्यों ही उसने पर्यवेक्षण कार्य करती हुई एक भारतीय सेना की एक टुकड़ी को आते देखा। इस टुकड़ी का नेतृत्व पोरस का 20 वर्षीय पुत्र कर रहा था। इसके नेतृत्व में एरियन के अनुसार 2,000 योद्धा और 120 रथ थे। जबकि जदुनाथ सरकार और कैप्टन वी० एन० मालीवाल के अनुसार 1,000 भारतीय घुड़सवार और 60 रथ थे।[5] यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि कहाँ अल्पवयस्क राजकुमार के नेतृत्व में 1,000 सैनिकों की टुकड़ी और कहाँ महानतम जनरल सिकन्दर के नेतृत्व में 11,000 कुशल सैनिकों की सेना। युवा राजकुमार को अपनी सेना को क्रम में आबद्ध करने और प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही करने का अवसर भी नहीं मिल पाया कि सिकन्दर के घुड़सवार धनुर्धर सैनिकों ने आक्रमण करके राजकुमार सहित 400 सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया और शेष इस भयंकर घटना को सूचित करने के लिए पोरस के कैम्प की तरफ भाग चले। लेकिन सिकन्दर का प्रिय घोड़ा बुकफेला इस लड़ाई में मारा गया और सिकन्दर भाग्यवश बच गया। राजकुमार की सभी सैन्य सामग्री और रथ, घोड़े आदि को अपने अधिकार में कर लिया क्योंकि दलदल में ये सभी धंस गये थे। अतः सभी सामग्रियों को छोड़ना स्वाभाविक ही था।

सिकन्दर और पोरस का मुकाबला

पुत्र सहित 400 सैनिकों की मृत्यु, शत्रु द्वारा पश्चिम तरफ से नदी पार कर खेमे पर धावा बोलने की आशंका और उत्तर तरफ से मुख्य सेना सहित महान् विजेता के आने की सूचना को सुनकर पोरस आश्चर्य चकित हो गया, किन्तु फिर भी अपने समस्त धैर्य को समेट कर अपने कैम्प में साथियों सहित कुछ सेना को छोड़ कर (क्रेटरस के पार उतरने का विरोध करने के लिए) 5,000 पैदल सैनिक, 3,000 घुड़सवार, 1,000 रथ और 130 हाथी को लेकर सिकन्दर का सामना करने के लिए चल पड़ा। जब दोनों की भेंट 'कारी' के मैदान में हुई तो सिकन्दर पोरस की व्यूहबद्ध खड़ी सेना को देखकर बोल उठा–"आखिर आज वह खतरा मेरे सामने आ ही गया जो मेरे साहस को ललकार रहा है। आज का युद्ध एक साथ जंगली जन्तुओं और असाधारण पौरुष के विरुद्ध है।"[6]

पोरस की सेना झेलम के तट पर कोण बनाती हुई खड़ी थी। सबसे आगे गज सेना, इनके अगल-बगल और पीछे पैदल सेना, इन पैदल टुकड़ियों के दायें और बायें पार्श्व पर अश्वारोही सेना तथा अश्वारोही सेना के अग्रभाग में रथ सेना तैनात की गयी थी । हाथियों के आगे भी उनकी रक्षा के लिए पैदल सेना नियत की गई थी। यह सैन्य रचना युद्धकला की दृष्टि से अति उत्तम थी। एक हाथी दूसरे हाथी से 200 फिट की दूरी पर खड़ा किया गया था। पृष्ठ भाग में 3,000 पैदल सैनिक रक्षित थे। पोरस मध्य में महागज पर आरूढ़ था।

इस स्थिति का अवलोकन कर सिकन्दर ने अपनी सेना को इस प्रकार खड़ा किया– मध्य में पैदल सेना (फैलेंक्स), इसके दोनों तरफ पैदल धनुर्धारी (हल्की सेना) और अपने घुड़सवार को दायें पार्श्व वाले धनुर्धारी सैनिकों के आगे तथा सबसे बायीं तरफ कोयनस के नेतृत्व में घुड़सवार सेना थी। जैसा कि आगे दिये गये चित्र से स्पष्ट है—

पोरस की सेना

(क) मध्यवर्ती पैदल सेना
(ख) दायें, बायें पार्श्व की पैदल सेना
(ग) बायें पार्श्व की अश्वारोही सेना
(घ) दायें पार्श्व की अश्वारोही सेना
(ङ) रथ सेना

Scanned by CamScanner

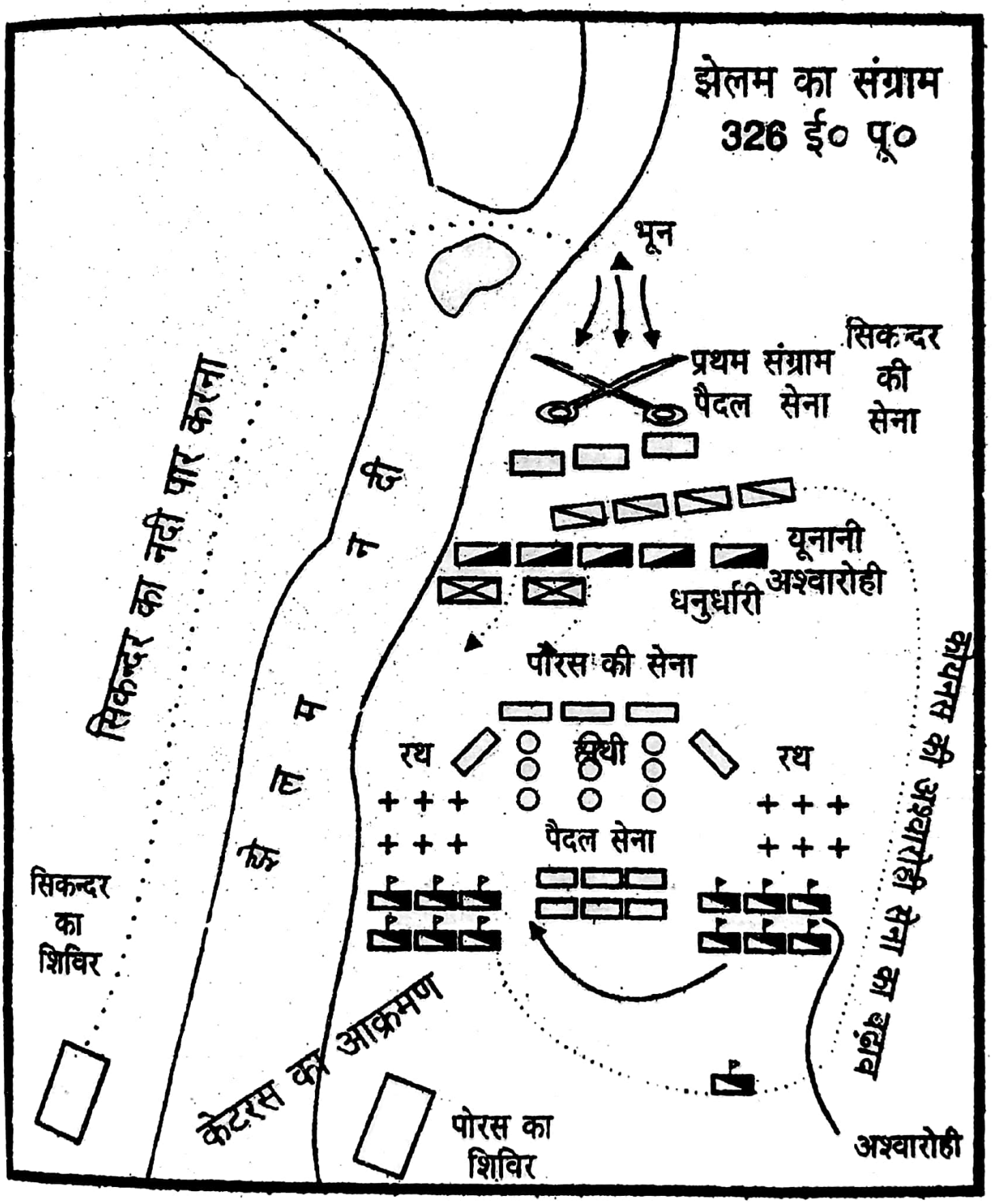

Scanned by CamScanner

(3) उचित अवसर पर कोयनस के नेतृत्व में हिन्दुस्तानी सेना पर अश्वारोही सेना द्वारा पृष्ठ भाग से आक्रमण कराना।

(4) भागते हुए सैनिकों का पीछा करना और उन्हें हताहत करना।

घमासान युद्ध का आरम्भ

सर्वप्रथम सिकन्दर ने पोरस के बायें पार्श्व की सेना पर अपने धनुर्धर अश्वारोहियों द्वारा वाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी और ज्यों ही पोरस की घुड़सवार सेना अस्त व्यस्त होने लगी त्यों ही अपने दायें पार्श्व वाली अश्वारोही सेना से उस पर तीव्रता के साथ आक्रमण करा दिया। साथ ही सिकन्दर की मुख्य पैदल सेना (फैलेंक्स) आगे बढ़कर मध्य भाग में स्थित पोरस की गज सेना और पैदल सेना पर धावा बोलने के लिए चल पड़ी। यह देखकर पोरस ने अपने रथों को आगे बढ़ने का आदेश दिया। इसकी शक्ति वास्तव में रथों में ही थी। प्लूतार्क[7] ने लिखा है कि अद्भुत शौर्य से लड़ते हुए, भारतीयों ने दिन की आठवीं घड़ी तक सिकन्दर की सेना को इंच भर आगे न बढ़ने दिया। परन्तु अन्त में पोरस का भाग्य करवट ले बैठा। युद्ध के दिन लगातार घनघोर जलवृष्टि के कारण रथ बेकार हो गये क्योंकि भूमि दलदली हो गयी थी जिससे घोड़े चलने में असमर्थ हो गये थे और रथ कीचड़ में धंस गये थे। कर्टियस ने लिखा है कि रथों की भारी बनावट और बोझ के कारण भारतीय धनुर्धरों का मनोबल धराशायी हो गया क्योंकि लम्बा धनुष होने के कारण धनुष के एक सिरे को जमीन पर टिकाकर बाण मारा करते थे। धनुष 5-7 फिट लम्बा होता था और बाण 9 फिट लम्बा होता था जिसके आगे 5 × 4 अंगुल का लोहे का फल लगा होता था। रथ में 4 घोड़े जुते होते थे और उसमें 6 रथी बैठते थे। वर्षा के कारण धनुष को जमीन पर टिकाना सम्भव न हो सका। यह तो रहा भाग्य का विश्वासघात।

भारतीय सेना का बोझिल संगठन मेसेडोनी घुड़सवारों की चोट न सम्भाल सका। उनके फुर्तीले धावे जब एक बाजू पर होते और पोरस की सेना जब तक उसे रोकने का प्रयत्न करती, तब तक वे दूसरे बाजू पर टूट पड़ते थे। अन्त में जिन हाथियों पर पोरस को नाज था, उन हाथियों ने धावा बोला। धावा बोलते ही सिकन्दर के सैनिक अपनी कुल्हाड़ी को उनके पैरों और सूंडों पर चलाने लगे। हाथियों में भगदड़ मच गई और एक भयानक परिस्थिति उत्पन्न हो गयी। भेड़ों के झुण्ड की भाँति ये विशालकाय पशु जिधर भी मुड़े उधर अपनी ही सेना को कुचलते अपने महावतों को भूमि पर फेंक, उनको पैरों से रौंदते रणभूमि से भाग चले।[8]

कर्टियस ने उस दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है—"इन विशालकाय पशुओं ने बहुत घबराहट और आतंक पैदा कर दिया। इनकी अद्भुत चिंघाड़ से न केवल घोड़े, जो प्रायः हर चीज से भड़कते हैं, वरन् मनुष्य भी घबड़ा उठे और सैन्य पंक्ति में बिखराव होने लगा।" बहुत से हाथी तो पागल हो गये और कुछ ने बिना महावत के अनियन्त्रित होने के कारण इधर-उधर घूम-घूमकर दोनों पक्षों के कुछ व्यक्तियों का संहार कर डाला। अधिकांश भारतीय हाथियों के शिकार में इसलिये आये क्योंकि उनकी जगह संकरी और मेसोडोनी सैनिक खुले तथा विस्तृत मैदानों में थे।

जब यह घटना घटित हुई तब पोरस ने यह देखा कि बायें पार्श्व की सेना कमजोर पड़ रही है। अतः उसने दायीं ओर की सेना कम करके बायें बाजू पर लगा दी। इस अवसर से सिकन्दर ने लाभ उठाकर फौरन कोयनस के नेतृत्व में घुड़सवार सेना द्वारा भारतीयों पर पीछे से आक्रमण करा दिया। इस आक्रमण से भारतीय सेना का धैर्य टूट गया और वह भाग खड़ी हुई। इस समय क्रेटरस की सेना नदी पार करके भारतीय सेना को क्षतिग्रस्त करने लगी और मैदान छोड़कर पलायन करती हुई भारतीय सेना का ग्रीक घुड़सवारों ने तीव्रता

Scanned by CamScanner

के साथ पीछा किया। युद्ध का अन्त तब आया जब सभी भारतीय सेना बुरी तरह हताहत हो चुकी तथा हाथी घायल हो चुके। पोरस युद्ध में तब तक सिकन्दर से लोहा लेता रहा जब तक उसके समस्त हाथी घायल न हो चले।

पराजय के कारण चाहे जो हों इसमें सन्देह नहीं कि छः फुट से ऊँचे विशालकाय पोरस ने युद्ध में भय को अपने पास फटकने तक न दिया। मनु के विधानसंग्रामेष्वनिवर्तित्वं (७–८८) के अनुसार नौ गहरी चोटों के लगने पर भी वह अनवरत रूप से शत्रु पर बाणों की वर्षा करता रहा। जब उसके शरीर से अधिकांश खून बह निकला, तब वह शिथिल हो गया और हाथी के हौदे से मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। अन्त में जब उसे बन्दी बनाकर सिकन्दर के पास लाया गया तब भी उसका मनोबल ज्यों का त्यों अपने स्थान पर बना रहा। जिस प्रकार एक वीर दूसरे से शक्ति सन्तुलन के बाद मिलता है, वह भी सिकन्दर से मिला, और उसके इस प्रश्न पर कि उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाये? "वैसा करो जैसा एक राजा शत्रु राजा के साथ करता है।"

इस उत्तर को सुनकर सिकन्दर काफी प्रभावित हुआ। जस्टिन लिखता है कि सिकन्दर ने पोरस के शौर्य से प्रभावित होकर उसे उसका राज्य लौटा दिया।[9] यह सिकन्दर की उदारता थी किन्तु राजनीति में इस प्रकार की उदारता का स्थान किंचित ही होता है। चाहे जो कुछ भी हो इस आचरण में सिकन्दर न केवल राजनीति बरत रहा था वरन् वह उन भारतीय विजेताओं की राजनीतिक परम्परा के भी अत्यन्त निकट था जिसका मनु[10] और कौटिल्य[11] ने स्पष्ट विधान किया है। दोनों का आदेश है कि जीते हुए राज्य पर अधिकार कर लेने के बाद उसको पराजित राजा अथवा उसके किसी वंशज को लौटा देना उचित है।

दोनों पक्षों की हानि

एरियन ने भारतीय सेना की हानि को बढ़ा-चढ़ाकर बताया है कि 23,000 व्यक्ति मारे गये जबकि मेसोडोनी हानि को कम कर बताया कि 80 पैदल और 230 घुड़सवार मारे गये। डिओडोरस ने अधिक संतुलित अनुमान दिया है कि सिकन्दर पक्ष के 280 घुड़सवार और 700 से अधिक पैदल सैनिक मारे गये। पोरस पक्ष के 12,000 से अधिक व्यक्ति मारे गये तथा 9,000 हजार बन्दी बनाये गये। सिकन्दर की जीवनी का सर्वश्रेष्ठ प्राचीन लेखक प्लूतार्क इस मत की पुष्टि करते हुए कहता है कि—"पोरस से हुई लड़ाई ने यूनानियों का साहस समाप्त कर दिया और उन्हें भारत में और आगे न बढ़ने का निर्णय लेने पर मजबूर कर दिया।"[12]

Scanned by CamScanner